



DR.ASHA JAIN

22 Jan 1964

09:54 AM

Jabalpur

Model: Web-MyKundli

Order No: 119059201

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 22/01/1964
दिन _____: बुधवार
जन्म समय _____: 09:54:00 घंटे
इष्ट _____: 07:31:21 घटी
स्थान _____: Jabalpur
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 23:10:00 उत्तर
रेखांश _____: 79:57:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:10:12 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 09:43:48 घंटे
वेलान्तर _____: -00:11:24 घंटे
साम्पातिक काल _____: 17:46:05 घंटे
सूर्योदय _____: 06:53:27 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:49:48 घंटे
दिनमान _____: 10:56:20 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शिशिर
सूर्य के अंश _____: 07:49:29 मकर
लग्न के अंश _____: 01:59:21 मीन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मीन - गुरु
राशि-स्वामी _____: मेष - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: अश्विनी - 3
नक्षत्र स्वामी _____: केतु
योग _____: साध्य
करण _____: विष्टि
गण _____: देव
योनि _____: अश्व
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: सिंह
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: चो-चोलुक्य
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कुम्भ

PT.AMITABH SHARMA

SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

ammupatni66@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1885	माघ	2
पंजाबी	संवत : 2020	माघ	9
बंगाली	सन् : 1370	माघ	8
तमिल	संवत : 2020	थई	9
केरल	कोल्लम : 1139	मकरम	8
नेपाली	संवत : 2020	माघ	9
चैत्रादि	संवत : 2020	माघ	शुक्ल 8
कार्तिकादि	संवत : 2020	माघ	शुक्ल 8

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 8
तिथि समाप्ति काल _____ : 22:00:15
जन्म तिथि _____ : 8
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : अश्विनी
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 20:17:45 घंटे
जन्म योग _____ : अश्विनी
सूर्योदय कालीन योग _____ : साध्य
योग समाप्ति काल _____ : 23:02:49 घंटे
जन्म योग _____ : साध्य
सूर्योदय कालीन करण _____ : विष्टि
करण समाप्ति काल _____ : 10:58:32 घंटे
जन्म करण _____ : विष्टि
भयात _____ : 31:06:10
भभोग _____ : 57:05:33
भोग्य दशा काल _____ : केतु 3 वर्ष 2 मा 11 दि

घात चक्र

मास _____ : कार्तिक
तिथि _____ : 1-6-11
दिन _____ : रविवार
नक्षत्र _____ : मघा
योग _____ : विष्कुम्भ
करण _____ : बव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मृग
लग्न _____ : मेष
सूर्य _____ : कर्क
चन्द्र _____ : मेष
मंगल _____ : सिंह
बुध _____ : वृष
गुरु _____ : कन्या
शुक्र _____ : तुला
शनि _____ : मिथुन
राहु _____ : वृश्चिक

PT. AMITABH SHARMA

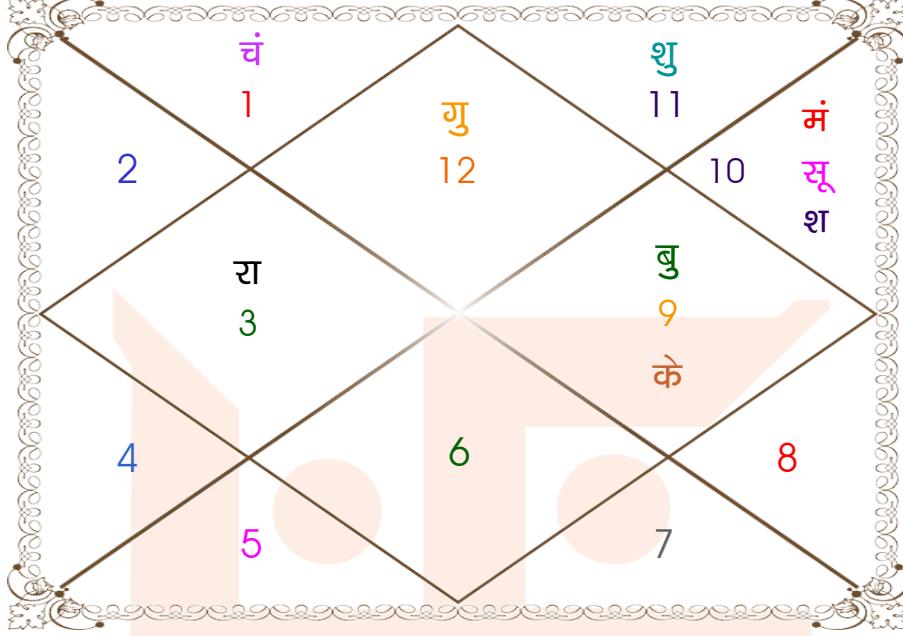
SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

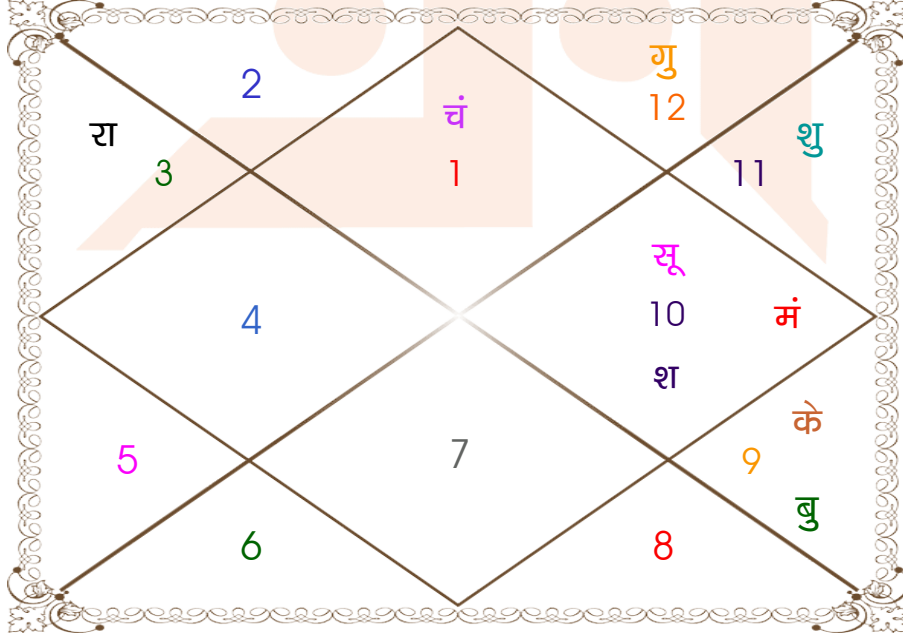
ammupatni66@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



PT.AMITABH SHARMA

SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

ammupatni66@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

गु ल	चं		रा
शु			
श सू मं			
के बु			

लग्न कुंडली

	चं	गु ल
रा		शु
		श सू मं
		बु के

विंशोत्तरी
केतु 3वर्ष 2मा 11दि
केतु

22/01/1964

03/04/2080

केतु	04/04/1967
शुक्र	04/04/1987
सूर्य	04/04/1993
चन्द्र	04/04/2003
मंगल	04/04/2010
राहु	03/04/2028
गुरु	03/04/2044
शनि	04/04/2063
बुध	03/04/2080

योगिनी
भ्रामरी 1वर्ष 9मा 28दि
संकटा

20/11/2019

20/11/2027

संकटा	30/08/2021
मंगला	19/11/2021
पिंगला	01/05/2022
धान्या	30/12/2022
भ्रामरी	20/11/2023
भद्रिका	30/12/2024
उल्का	01/05/2026
सिद्धा	20/11/2027

PT.AMITABH SHARMA

SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

ammupatni66@gmail.com

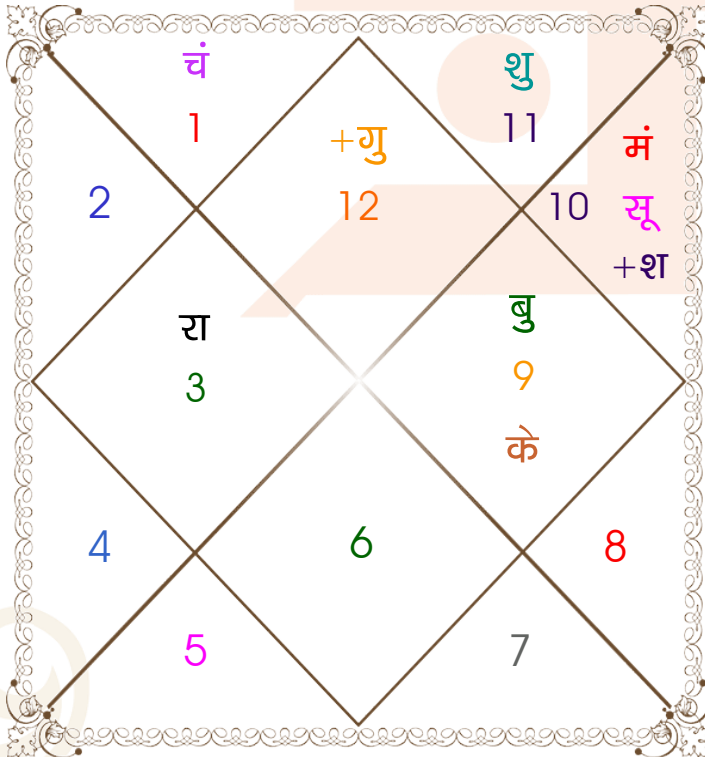
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	01:59:21	482:23:26	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	---
सूर्य			मक	07:49:29	01:01:03	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि
चंद्र			मेष	07:14:30	14:01:18	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	राहु	सम राशि
मंगल	अ		मक	13:39:16	00:47:11	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	राहु	उच्च राशि
बुध			धनु	13:48:08	00:43:08	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	सम राशि
गुरु			मीन	19:52:46	00:08:42	रेवती	1	27	गुरु	बुध	शुक्र	स्वराशि
शुक्र			कुंभ	12:50:26	01:13:14	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	बुध	मित्र राशि
शनि			मक	29:22:16	00:06:55	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	शनि	स्वराशि
राहु	व		मिथु	17:41:23	00:00:01	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	सूर्य	उच्च राशि
केतु	व		धनु	17:41:23	00:00:01	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	मंगल	उच्च राशि
हर्ष	व		सिंह	16:06:42	00:01:52	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	सूर्य	---
नेप			तुला	24:16:21	00:00:55	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	---
प्लूटो	व		सिंह	20:32:48	00:01:03	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	---
दशम भाव			धनु	03:27:09	--	मूल	--	19	गुरु	केतु	सूर्य	--

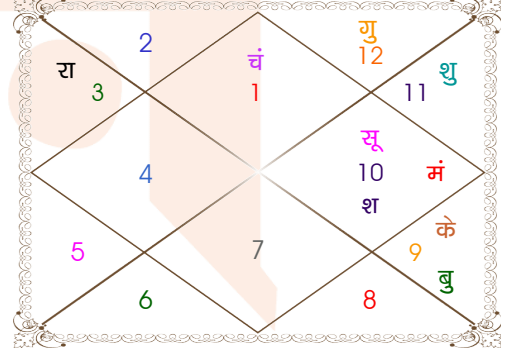
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:21:02

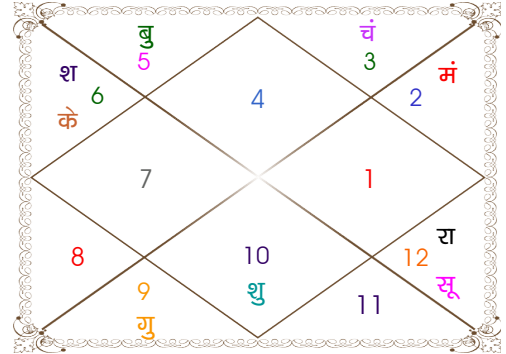
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



PT. AMITABH SHARMA

SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

ammupatni66@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कुम्भ 17:13:59	मीन 01:59:21
2	मीन 17:13:59	मेष 02:28:37
3	मेष 17:43:15	वृष 02:57:53
4	वृष 18:12:31	मिथुन 03:27:09
5	मिथुन 18:12:31	कर्क 02:57:53
6	कर्क 17:43:15	सिंह 02:28:37
7	सिंह 17:13:59	कन्या 01:59:21
8	कन्या 17:13:59	तुला 02:28:37
9	तुला 17:43:15	वृश्चिक 02:57:53
10	वृश्चिक 18:12:31	धनु 03:27:09
11	धनु 18:12:31	मकर 02:57:53
12	मकर 17:43:15	कुम्भ 02:28:37

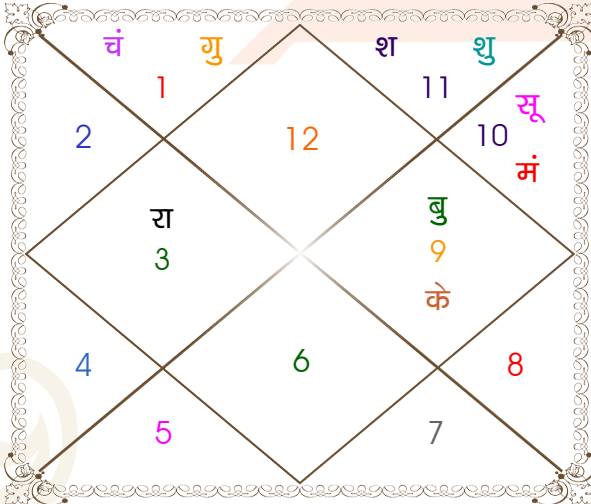
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	01:59:21
2	मेष	08:54:31
3	वृष	08:20:40
4	मिथुन	03:27:09
5	मिथुन	28:09:20
6	कर्क	26:23:29
7	कन्या	01:59:21
8	तुला	08:54:31
9	वृश्चिक	08:20:40
10	धनु	03:27:09
11	धनु	28:09:20
12	मकर	26:23:29

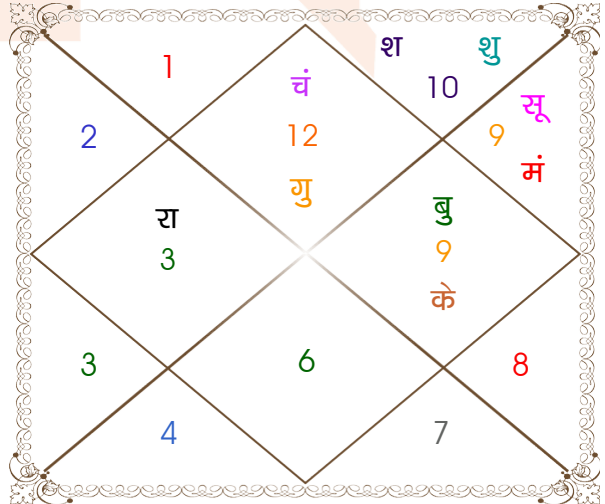
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती

चलित कुंडली



भाव कुंडली



PT.AMITABH SHARMA

SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

ammupatni66@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 3 वर्ष 2 मास 11 दिन

केतु 7 वर्ष 22/01/1964 04/04/1967	शुक्र 20 वर्ष 04/04/1967 04/04/1987	सूर्य 6 वर्ष 04/04/1987 04/04/1993	चंद्र 10 वर्ष 04/04/1993 04/04/2003	मंगल 7 वर्ष 04/04/2003 04/04/2010
00/00/0000	शुक्र 04/08/1970	सूर्य 23/07/1987	चंद्र 02/02/1994	मंगल 31/08/2003
00/00/0000	सूर्य 04/08/1971	चंद्र 21/01/1988	मंगल 03/09/1994	राहु 18/09/2004
00/00/0000	चंद्र 04/04/1973	मंगल 28/05/1988	राहु 04/03/1996	गुरु 25/08/2005
00/00/0000	मंगल 04/06/1974	राहु 22/04/1989	गुरु 04/07/1997	शनि 03/10/2006
22/01/1964	राहु 03/06/1977	गुरु 08/02/1990	शनि 02/02/1999	बुध 01/10/2007
राहु 22/03/1964	गुरु 02/02/1980	शनि 21/01/1991	बुध 04/07/2000	केतु 27/02/2008
गुरु 26/02/1965	शनि 04/04/1983	बुध 27/11/1991	केतु 02/02/2001	शुक्र 28/04/2009
शनि 07/04/1966	बुध 02/02/1986	केतु 03/04/1992	शुक्र 03/10/2002	सूर्य 03/09/2009
बुध 04/04/1967	केतु 04/04/1987	शुक्र 04/04/1993	सूर्य 04/04/2003	चंद्र 04/04/2010
राहु 18 वर्ष 04/04/2010 03/04/2028	गुरु 16 वर्ष 03/04/2028 03/04/2044	शनि 19 वर्ष 03/04/2044 04/04/2063	बुध 17 वर्ष 04/04/2063 03/04/2080	केतु 7 वर्ष 03/04/2080 00/00/0000
राहु 15/12/2012	गुरु 22/05/2030	शनि 07/04/2047	बुध 31/08/2065	केतु 30/08/2080
गुरु 11/05/2015	शनि 03/12/2032	बुध 15/12/2049	केतु 28/08/2066	शुक्र 31/10/2081
शनि 17/03/2018	बुध 11/03/2035	केतु 24/01/2051	शुक्र 28/06/2069	सूर्य 07/03/2082
बुध 03/10/2020	केतु 15/02/2036	शुक्र 26/03/2054	सूर्य 04/05/2070	चंद्र 06/10/2082
केतु 21/10/2021	शुक्र 16/10/2038	सूर्य 08/03/2055	चंद्र 04/10/2071	मंगल 05/03/2083
शुक्र 21/10/2024	सूर्य 04/08/2039	चंद्र 06/10/2056	मंगल 30/09/2072	राहु 22/01/2084
सूर्य 15/09/2025	चंद्र 03/12/2040	मंगल 15/11/2057	राहु 19/04/2075	00/00/0000
चंद्र 17/03/2027	मंगल 09/11/2041	राहु 21/09/2060	गुरु 25/07/2077	00/00/0000
मंगल 03/04/2028	राहु 03/04/2044	गुरु 04/04/2063	शनि 03/04/2080	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 3 वर्ष 2 मा 7 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

PT. AMITABH SHARMA

SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001
94244 10023, 62632 74669
ammupatni66@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - सूर्य 21/10/2024 15/09/2025	राहु - चंद्र 15/09/2025 17/03/2027	राहु - मंगल 17/03/2027 03/04/2028	गुरु - गुरु 03/04/2028 22/05/2030	गुरु - शनि 22/05/2030 03/12/2032
सूर्य 07/11/2024 चंद्र 04/12/2024 मंगल 23/12/2024 राहु 11/02/2025 गुरु 26/03/2025 शनि 17/05/2025 बुध 03/07/2025 केतु 22/07/2025 शुक्र 15/09/2025	चंद्र 31/10/2025 मंगल 02/12/2025 राहु 22/02/2026 गुरु 06/05/2026 शनि 01/08/2026 बुध 17/10/2026 केतु 18/11/2026 शुक्र 17/02/2027 सूर्य 17/03/2027	मंगल 08/04/2027 राहु 05/06/2027 गुरु 26/07/2027 शनि 25/09/2027 बुध 18/11/2027 केतु 10/12/2027 शुक्र 12/02/2028 सूर्य 02/03/2028 चंद्र 03/04/2028	गुरु 16/07/2028 शनि 17/11/2028 बुध 07/03/2029 केतु 21/04/2029 शुक्र 29/08/2029 सूर्य 07/10/2029 चंद्र 11/12/2029 मंगल 26/01/2030 राहु 22/05/2030	शनि 16/10/2030 बुध 24/02/2031 केतु 19/04/2031 शुक्र 20/09/2031 सूर्य 06/11/2031 चंद्र 22/01/2032 मंगल 16/03/2032 राहु 01/08/2032 गुरु 03/12/2032
गुरु - बुध 03/12/2032 11/03/2035	गुरु - केतु 11/03/2035 15/02/2036	गुरु - शुक्र 15/02/2036 16/10/2038	गुरु - सूर्य 16/10/2038 04/08/2039	गुरु - चंद्र 04/08/2039 03/12/2040
बुध 30/03/2033 केतु 17/05/2033 शुक्र 02/10/2033 सूर्य 13/11/2033 चंद्र 21/01/2034 मंगल 10/03/2034 राहु 12/07/2034 गुरु 31/10/2034 शनि 11/03/2035	केतु 31/03/2035 शुक्र 26/05/2035 सूर्य 12/06/2035 चंद्र 11/07/2035 मंगल 31/07/2035 राहु 20/09/2035 गुरु 04/11/2035 शनि 28/12/2035 बुध 15/02/2036	शुक्र 26/07/2036 सूर्य 13/09/2036 चंद्र 03/12/2036 मंगल 29/01/2037 राहु 24/06/2037 गुरु 01/11/2037 शनि 04/04/2038 बुध 20/08/2038 केतु 16/10/2038	सूर्य 30/10/2038 चंद्र 24/11/2038 मंगल 11/12/2038 राहु 23/01/2039 गुरु 03/03/2039 शनि 19/04/2039 बुध 30/05/2039 केतु 16/06/2039 शुक्र 04/08/2039	चंद्र 13/09/2039 मंगल 12/10/2039 राहु 24/12/2039 गुरु 27/02/2040 शनि 14/05/2040 बुध 22/07/2040 केतु 19/08/2040 शुक्र 08/11/2040 सूर्य 03/12/2040
गुरु - मंगल 03/12/2040 09/11/2041	गुरु - राहु 09/11/2041 03/04/2044	शनि - शनि 03/04/2044 07/04/2047	शनि - बुध 07/04/2047 15/12/2049	शनि - केतु 15/12/2049 24/01/2051
मंगल 23/12/2040 राहु 12/02/2041 गुरु 29/03/2041 शनि 22/05/2041 बुध 10/07/2041 केतु 29/07/2041 शुक्र 24/09/2041 सूर्य 11/10/2041 चंद्र 09/11/2041	राहु 20/03/2042 गुरु 15/07/2042 शनि 01/12/2042 बुध 04/04/2043 केतु 25/05/2043 शुक्र 18/10/2043 सूर्य 01/12/2043 चंद्र 12/02/2044 मंगल 03/04/2044	शनि 24/09/2044 बुध 27/02/2045 केतु 02/05/2045 शुक्र 01/11/2045 सूर्य 26/12/2045 चंद्र 28/03/2046 मंगल 31/05/2046 राहु 12/11/2046 गुरु 07/04/2047	बुध 24/08/2047 केतु 21/10/2047 शुक्र 02/04/2048 सूर्य 21/05/2048 चंद्र 11/08/2048 मंगल 07/10/2048 राहु 03/03/2049 गुरु 13/07/2049 शनि 15/12/2049	केतु 08/01/2050 शुक्र 16/03/2050 सूर्य 06/04/2050 चंद्र 09/05/2050 मंगल 02/06/2050 राहु 02/08/2050 गुरु 25/09/2050 शनि 28/11/2050 बुध 24/01/2051

PT. AMITABH SHARMA

SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

ammupatni66@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	4
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 4, 6, 7
शत्रु अंक	3, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	सोम, मंगल, गुरु
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

PT.AMITABH SHARMA

SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

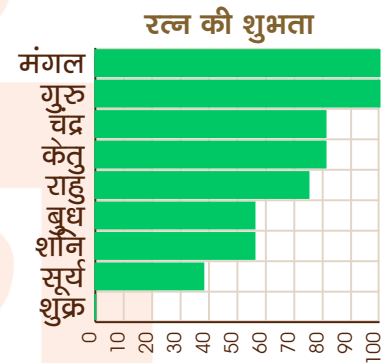
ammupatni66@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	100%	धनार्जन, धन, भाग्योदय
पुखराज	गुरु	100%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	81%	धन, सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	81%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
गोमेद	राहु	75%	सुख, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	56%	व्यावसायिक उन्नति, सुख, दम्पति
नीलम	शनि	56%	धनार्जन, कम खर्च
माणिक्य	सूर्य	38%	हानि, शत्रु व रोग
हीरा	शुक्र	0%	व्यय, पराक्रम हानि, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	04/04/1967	12%	69%	100%	56%	100%	0%	37%	62%	94%
शुक्र	04/04/1987	12%	69%	100%	62%	100%	0%	62%	81%	88%
सूर्य	04/04/1993	56%	88%	100%	56%	100%	0%	37%	62%	69%
चंद्र	04/04/2003	50%	94%	100%	62%	100%	0%	56%	62%	69%
मंगल	04/04/2010	50%	88%	100%	38%	100%	0%	56%	62%	88%
राहु	03/04/2028	12%	69%	89%	56%	100%	0%	62%	88%	69%
गुरु	03/04/2044	50%	88%	100%	38%	100%	0%	56%	75%	81%
शनि	04/04/2063	12%	69%	89%	62%	100%	0%	68%	81%	69%
बुध	03/04/2080	50%	69%	100%	69%	100%	0%	56%	75%	81%

PT. AMITABH SHARMA

SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

ammupatni66@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	09/04/1966-03/11/1966 20/12/1966-17/06/1968 17/06/1968-07/03/1969
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	17/06/1968-17/06/1968 07/03/1969-28/04/1971 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	28/04/1971-10/06/1973 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/1975-07/09/1977 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/12/1984-01/06/1985 17/09/1985-17/12/1987 -----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017 -----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

सम
अशुभ
शुभ
सम
सम

क्षेत्र

स्वास्थ्य
धन
पराक्रम
सन्तति कष्ट
बदनामी

PT. AMITABH SHARMA

SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

ammupatni66@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है यह भाव आय समृद्धि आदि का प्रतिनिधि भाव है अतः इसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही आपके आय स्रोत भी एक से अधिक रहेंगे। जीवन में जमीन जायदाद से भी आप युक्त होंगे तथा इसके कय विक्रय से यथोचित लाभ प्राप्त करेंगे। समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपको उचित आदर प्रदान करेंगे। आपको किसी विशिष्ट सम्मान की भी प्राप्ति होगी एवं धनऐश्वर्य से युक्त रहकर आप अपना जीवन यापन करेंगे।

एकादश भाव से द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही वाणी में भी यदा कदा कठोरता रहेगी एवं प्रारंभिक शिक्षा अर्जित करने में आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तथा परिश्रम पूर्वक आप इसमें सफलता प्राप्त करेंगे। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से संतति से आप युक्त रहेंगे लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है साथ ही उनसे आपको जीवन में सुख एवं सहयोग सामान्य रूप से ही प्राप्त होगा। उच्च शिक्षा को आप परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगे तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके अच्छे संबंध रहेंगे एवं उनसे न्यूनाधिक मात्रा में सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठ भाव में मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही किसी प्रतियोगी परीक्षा मुकदमे या चुनाव आदि में आप सफलता अर्जित करेंगे। शरीर यदा कदा गर्मी पित या रक्त विकार आदि से सामान्य अस्वस्थ हो सकता है। लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके साथ ही मामा आदि से भी आपके विशेष संबंधों में अल्पता रहेगी तथा उनसे जीवन में सुख एवं सहयोग भी अल्प मात्रा में प्राप्त होगा।

इस प्रकार आप धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा यत्न पूर्वक पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करेंगे जिससे आपसे वे सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे इच्छित सहयोग एवं सुख प्राप्त करेंगे। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा एवं आपसी संबंधों में भी सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शंखपाल नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय हो जाता है। माता-पिता एवं पारिवारिक सदस्य से कभी-कभी जातक नुकसान प्राप्त करता है। विद्याध्ययन में थोड़ी बहुत बाधा आती है। नौकर चाकर सवारी आदि से भी जातक को कोई न कोई चिन्ता परेशानी घेरे रहती है।

इस योग के कारण जमीन-जायदाद, चल-अचल, घर-द्वार सम्बन्धी वस्तुओं पर कभी-कभी थोड़ा बहुत परेशानी आती रहती है। जातक अनेक कामों को एक साथ करता है। पर कोई भी काम प्रायः पूरा नहीं होता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में कभी कोई रोग व्याधि घेर लेती है। जिसमें सामान्य से थोड़ा विशेष खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। अर्थात् नाजुक हो जाती है और कालान्तर में पुनः आर्थिक स्थिति सामान्य हो जाती है।

इसके प्रभाव से जातक को बेवजह चिन्ता-परेशानी ग्रसित कर लेती है। कार्यारम्भ में अनेक प्रकार के व्यवधान उपस्थित हो जाते हैं। जो कालान्तर में वे व्यवधान स्वतः नष्ट हो जाते हैं। जातक कितना भी परिश्रम कर ले पर सुख प्राप्ति में बाधा व संघर्ष की स्थिति बनी रहती है। इस योग के प्रभाव से व्यवसाय के क्षेत्र में जातक को सफलता मिलती है और राजनीति एवं नौकरी में सफलता प्राप्त होती है और सामाजिक मान सम्मान भी प्राप्त होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 'ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अद्वारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक

करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।

11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।

12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।

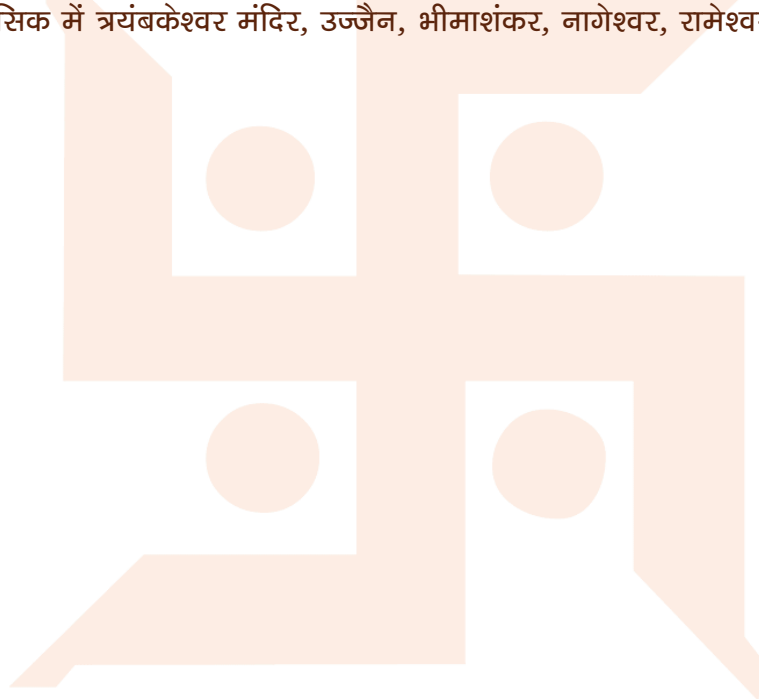
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।

14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।

15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में मंगल के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदरोगी होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

द्वितीयभाव में चन्द्रमा हो तो जातक परदेशवासी, भोगी, सुन्दर मधुरभाषी, भाग्यवान्, सहनशील एवं शान्तिप्रिय होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरु, यात्रा करने का शौकीन, आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रुग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरे की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान

करके सुखानुभूति करेंगे।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराकमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अर्जित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान्, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

गुरु

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों को सहायता करने वाला, सच्चरित्र, सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील एवं रोग से सन्तप्त होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान्, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, अल्पभाषी, मिथ्याचारी, उदरव्याधियुक्त, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं क्रूर होता है।

मिथुन राशि में राहु हो तो जातक- साहसी, दीर्घायु, साधु गाने वाला, योगाभ्यासी एवं बलवान् होता है।

केतु

दशम भाव में केतु हो तो जातक अभिमानी, परिश्रमशील मूर्ख, पितृद्वेषी, दुर्भागी, संन्यास लेना एवं योगी होता है।

धनु राशि में केतु हो तो जातक चंचल, धूर्त एवं मिथ्यावादी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(04/04/2010 - 03/04/2028)

राहु की महादशा 04/04/2010 को आरम्भ होकर 03/04/2028 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्म कुण्डली में राहु चतुर्थ भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि दशम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको यश, ख्याति, जीविका में प्रगति और समृद्धि की प्राप्ति होगी। राहु की इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति और लाभ की प्राप्ति, अचल सम्पत्ति तथा सुख में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्तिशाली होंगे। एक सन्तुलित जीवन के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मौसम में परिवर्तन के फलस्वरूप चर्मरोग, पाचन-समस्या, हृदय संबंधी समस्या, विषाणुजन्य संक्रामक रोग आदि हो सकता है। थोड़ी सावधानी से इन रोगों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। आपको सभी भौतिक सुख मिलेंगे। आपको माता से लाभ मिल सकता है। आपको जहाँ तक सम्भव हो सट्टे से बचना चाहिए। व्यावसायिक उपार्जन, व्यापार से आय अच्छी होगी। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि के क्षेत्र, विमान उड्डयन, विमान-चालन, कला, सम्पर्क-कार्य, कम्प्यूटर, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, व्यापार आदि का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, दवा, चमड़ा, एण्टी-बायोटेक दवा, प्लास्टिक, रबड़ आदि का व्यापार लाभप्रद हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों की आय में वृद्धि, सम्मान, वरिष्ठ कर्मचारियों के अनुग्रह तथा वांछित लक्ष्य की प्राप्ति होगी। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को साझेदारों से लाभ, व्यापार में सफलता, विदेश यात्रा, आय में वृद्धि और उपार्जन होगा। जीविका में प्राप्ति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

इस दशा के दौरान आपको सभी भौतिक समृद्धि मिलेगी और सुखों में वृद्धि होगी। आप अपना आवास परिवर्तित कर सकते हैं। इस दशा में आपको चल सम्पत्ति, जमीन-जायदाद की प्राप्ति हो सकती है। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी व दूर की यात्रा होगी। छोटी यात्रा में सम्भावित नुकसान से बचने के लिए सावधानी बरतनी चाहिए।

शिक्षा :

आपकी बुनियादी शिक्षा उत्तम होगी। उच्च शिक्षा के लिए आप अपनी संस्था में परिवर्तन कर सकते हैं। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आप कठिन परिश्रम करेंगे। दशा की प्रगति के साथ स्थिति में सुधार आएगा। विज्ञान, कला, कम्प्यूटर-विज्ञान, व्यापार आदि में आपकी रुचि हो सकती है। आपकी इच्छा शक्ति मजबूत है, आप स्वभाव से स्वतंत्र हैं और अपनी शिक्षा में अच्छा करेंगे।

PT.AMITABH SHARMA

SHREEDeo PANCHANG JYOTISH KARYALAYA NAYAPARA RAIPUR, CHHATTISGARH 402001

94244 10023, 62632 74669

ammupatni66@gmail.com

परिवार :

आपके बच्चों के जीवन में कुछ परिवर्तन होगा और उन्हें आपकी सहायता तथा मार्गदर्शन की आवश्यकता हो सकती है। आपका आपके जीवनसाथी के साथ संबंध सन्तोषजनक रहेगा। आपकी माता की सम्पत्ति में वृद्धि होगी, आर्थिक-समृद्धि की प्राप्ति होगी और उन्हें स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतनी होगी। आपके पिता की यात्रा, अचानक लाभ की प्राप्ति तथा आध्यात्मिक विकास होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को अचानक धन-लाभ और जीवन का सुख मिलेगा जबकि बड़े भाई-बहनों को प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय और भौतिक समृद्धि की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपको सुख, अचल सम्पत्ति की प्राप्ति तथा लाभ मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा भाग्यशाली सिद्ध होगी यद्यपि प्रतिद्वन्द्वियों के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। शनि की अन्तर्दशा कष्टकारक सिद्ध हो सकती है किन्तु, भौतिक कला व यात्रा का अवसर प्रदान करेगी। बुध की अन्तर्दशा छोटे भाई-बहनों के लिए सहायक होगी और इसके फलस्वरूप उनको यात्रा और व्यय होगा। केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्याएं हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर दशा के फलस्वरूप लाभ और सम्पत्ति में वृद्धि होगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के कारण पारिवारिक सुख मिलेगा और सम्पत्ति में वृद्धि होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी जबकि योगकारक मंगल के कारण सुख की प्राप्ति, बच्चे का जन्म और जीविका में प्रगति होगी।

अंतर्दशा :- राहु - सूर्य
(21/10/2024 - 15/09/2025)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 04/04/2010 को प्रारंभ होकर 03/04/2028 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 21/10/2024 को प्रारंभ होकर 15/09/2025 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। एकादश भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप सिद्धांतों के पक्के और दूरदर्शी होंगे। सब कार्यों में सफलता मिलेगी पर बाधाओं को पार करने के बाद। लोकप्रियता के कारण शत्रु अधिक होंगे, जिनसे सावधान रहना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य वैदिक मंत्र के 7000 जाप करें।

प्रातःकाल सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

अंतर्दशा :- राहु - चन्द्र
(15/09/2025 - 17/03/2027)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 04/04/2010 को प्रारंभ होकर 03/04/2028 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा 1 वर्ष 6 मास की होगी जो आपके लिए 15/09/2025 को प्रारंभ होकर 17/03/2027 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है। द्वितीय भाव में स्थित होकर चंद्रमा आपकी कुंडली के अष्टम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप सुरुचिपूर्ण, शिष्ट और प्रसन्नचित्त होंगे, कार्य/व्यापार और समाज में सफल रहेंगे। भाग्य साथ देगा, धनी बनेंगे। विपरीत लिंग के व्यक्ति आपकी ओर प्रभावित होंगे मगर वे आप पर हावी हो सकते हैं। इस संबंध में सावधानी आवश्यक है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

चंद्रमा को चंद्र उदय के समय मंत्रोच्चार करते हुए कच्चा दूध अर्पित करें।

**महादशा :- गुरु
(03/04/2028 - 03/04/2044)**

गुरु की महादशा की अवधि सोलह वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 03/04/2028 को आरम्भ और 03/04/2044 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में गुरु लग्न में स्थित है। यह शरीर रचना, रूपकार, स्वास्थ्य, स्वभाव, प्रवृत्ति, प्रतिष्ठा, सामान्य रहन-सहन, चेहरे के ऊपरी भाग, दीर्घ आयु और सामान्य जीवन की संरचना के प्रति विचार का द्योतक है। गुरु स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जो आपकी जन्मकुण्डली में प्रथम भाव में स्थित होकर पंचम, सप्तम तथा नवम भावों को देखता हुआ उनपर अपना शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्ष की यह दशा शान्ति, समृद्धि और उत्तम स्वास्थ्य की दशा होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा का स्वामी अपने ही भाव में स्थित होकर भाव को शक्ति दे रहा है। फलतः इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी और आप अपने सामान्य कार्यों का सम्पादन करने की स्थिति में होंगे।

अर्थ-सम्पत्ति :

गुरु की प्रथम भाव में स्थिति और पंचम तथा नवम (सप्तम के अतिरिक्त) भाव अर्थात् दो त्रिकोणों पर उसकी दृष्टि के कारण इस दशा के दौरान आप भाग्यशाली होंगे। आप अपनी आय के स्रोतों और चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि करेंगे। आप भोग-विलास की वस्तुओं पर व्यय भी करेंगे।

व्यवसाय :

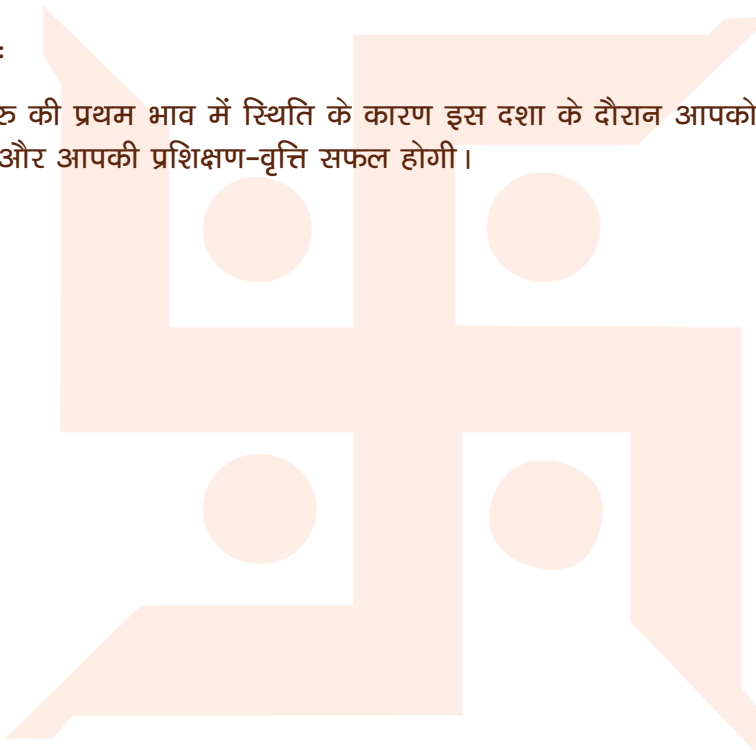
प्रथम भाव में स्थित गुरु के कारण आप अपने ही प्रयास से अपना जीविकोपार्जन करेंगे। आप जिस किसी भी व्यवसाय में हों, उन्नति करेंगे। आप नौकरीपेशा हों अथवा व्यवसायी, जीवन में उन्नति करेंगे और मकान, वाहन आदि सम्पत्ति में वृद्धि करेंगे। आपकी शिक्षा तथा ज्ञान में भी वृद्धि होगी।

पारिवारिक जीवन :

गुरु की प्रथम भाव में स्थिति तथा पंचम, सप्तम तथा नवम भावों अर्थात् भूत-कर्म भाव, जीवन संगी भाव और सुख कर्म पर उसकी दृष्टि के कारण आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त सुव्यवस्थित तथा सौहार्दपूर्ण होगा। आपके जीवनसाथी आपके सहयोगी और आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपके माता-पिता आपके जीवन को सुखमय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

गुरु की प्रथम भाव में स्थिति के कारण इस दशा के दौरान आपको शिक्षा के उत्तम अवसर मिलेंगे और आपकी प्रशिक्षण-वृत्ति सफल होगी।



**अंतर्दशा :- गुरु - गुरु
(03/04/2028 - 22/05/2030)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 03/04/2028 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 03/04/2028 को प्रारंभ होकर 22/05/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आप सौभाग्यशाली रहेंगे, सम्मानित होंगे, धनी बनेंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी। आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी; योग्यता विकसित होगी। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा, संतान सुखकारी होगी। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। व्यापार से लाभ में वृद्धि होगी। चुनाव में जीत होगी; हर काम में सफल रहेंगे। पुत्र का जन्म हो सकता है। घर में मांगलिक उत्सव हो सकता है। पिता से संबंध उत्तम रहेंगे। विद्वानों, संतों से संपर्क बढ़ेगा।

आपके जीवनसाथी को व्यापार में लाभ होगा, उच्चपद प्राप्त होगा, धनी बनेंगे। आपके पिता को निवेश से लाभ हो सकता है। माता की किस्मत चमकेगी; आपके भाई-बहनों के लिए परीक्षा में सफलता, संचार माध्यम में कुशलता, लघु यात्राओं का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्राएं होंगी, धनी बनेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकता है; अप्रत्याशित प्रगति या धनलाभ संभव है। परामर्शदाता धनी बनेंगे; अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ॐ बृं बृहस्पतये नमः